अम्मा सड़क चली।।

गाड़ी में जब बैठ सभी ने
खिड़की बंद करी;
घर को छोड़ चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

बड़ी सड़क के आते आते
पकड़ी तेज गती;
कितनी तेज चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

सड़क चली तो खेत चल पड़े
पेड़ बने संगी;
मेला छोड़ चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।
नानी का घर आते आते
फिर से मंद पड़ी;
मद्धम सड़क चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

गाड़ी रुकी सड़क रुक गई
यह कौतुक से भरी;
देखो सड़क चली
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

बाबा अम्मा तनिक बताओ
यह कैसी मुकरी;
कैसे सड़क चली?
बाबा सड़क चली।
अम्मा सड़क चली।।

सुमति श्रीवास्तव

सुमति श्रीवास्तव
जौनपुर उत्तर प्रदेश
मोबाइल - 8887595619

एक टुकड़ा रोटी दे दो यार

एक टुकड़ा रोटी दे दो यार, आंखें धंसी रूप हो गया कुरूप।
नन्ही कोमल काया कुमहलाती भरी धूप,
किससे कहें विपद वो अपनी,
तन संग मन भी है छलनी।
चला बुझाने नन्हा दिया, पेट की अगन।
छोड खुशियां भूख ने किया मगन
आज मौत बना रही आभार, एक टुकड़ा रोटी दे दो यार।।
देख रहे सब खटते उसको, आज पुकारे जाने किसको।
नयनों में भरकर पानी, सारा जग करे मनमानी।
आंते करती बस यही पुकार, एक टुकड़ा रोटी दे दो यार।।
सांसें बस अतिथि बनी है, ये कालिमा बड़ी घनी है।
दे दो मुझे सुत की जूठन, नहीं बना है घर में भोजन।
छोड़ो सब सपने साकार, एक टुकड़ा रोटी दे दो यार।।।